



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 78]

No. 78]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, फरवरी 26, 2009/फाल्गुन 7, 1930
NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 26, 2009/PHALGUNA 7, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 फरवरी, 2009

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : ईरान इस्लामिक गणराज्य के मूल के या वहां से निर्यातित हैक्सा मैथाइलीन टेट्रामाइन (हैक्सामाइन) के आयातों से संबंधित मामले में निर्णायक पाटनरोधी समीक्षा जांच ।

सं. 15/10/2007-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) एवं सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

क मामले की पृष्ठभूमि

1. मै केनोरिया केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि., मुंबई ने ईरान इस्लामिक गणराज्य के मूल के या वहां से निर्यातित हैक्सामाइन के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष पूर्व में एक पाटनरोधी याचिका दायर की थी । इस याचिका का मै. सिमालिन कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., बड़ौदा तथा मै. रॉक हार्ड पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज लि., इंदौर और मै. न्यूटन इंजीनियरिंग एंड कैमिकल्स लि., बड़ौदा ने समर्थन किया था । जांच अवधि 1 अप्रैल, 2001 से 30 जून, 2002 तक की थी । जांच अवधि में याचिकाकर्ता का कुल उत्पादन 35.62% बनता है और याचिकाकर्ता एवं समर्थक का कुल मिलाकर उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन का 100% बनता है ।

2. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 एवं सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम 1995 को ध्यान में रखते हुए 23 दिसम्बर, 2002 की अधिसूचना द्वारा अंतिम शुल्क लगाने की सिफारिश की थी और भारत सरकार द्वारा 17 मार्च, 2003 की अधिसूचना सं. 42/2003 के तहत अंतिम शुल्क लगाया गया था ।

3. प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के बाद मै. साइना कैमिकल्स इंडस्ट्रीज कंपनी, ईरान ने नियमानुसार कीमत वचनपत्र प्रस्तुत करने की अपनी इच्छा प्रदर्शित की। निर्यातक ने यह भी सूचित किया कि वचन पत्र स्वीकार होने के बाद जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए क्योंकि ईरान में हैक्सामाइन का कोई अन्य उत्पादक नहीं है। घरेलू उद्योग ने भी निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अनुरोध किया कि निर्यातक द्वारा प्रदत्त कीमत वचनपत्र को स्वीकार कर लिया जाए और जांच स्थगित कर दी जाए। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 15 के अनुसार मै. साइना कैमिकल्स इंडस्ट्रीज कंपनी के कीमत वचन पत्र को स्वीकार किया है और 17 सितंबर, 2003 की अधिसूचना द्वारा तदनुसार जांच स्थगित कर दी।
4. मै. कनोरिया कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि. ने मै.साइना कैमिकल्स इंडस्ट्रीज कंपनी द्वारा कीमत वचनपत्र के उल्लंघन का आरोप लगाते हुए 27.4.2004 को एक लिखित अभ्यावेदन प्रस्तुत किया और निर्यातक द्वारा पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसरण में समय-समय पर प्रदत्त सूचना की जांच के बाद प्राधिकारी ने मै. साइना कैमिकल्स इंडस्ट्रीज कंपनी द्वारा प्रदत्त कीमत वचनपत्र को समाप्त करने और 17 सितंबर, 2003 के जांच आदेश के स्थगन को वापस लेने का निर्णय लिया।
5. 17 सितंबर, 2003 के जांच आदेश के स्थगन को वापस लेते हुए 15 अक्टूबर, 2004 की अधिसूचना सं. 14/35/2002-डीजीएडी के आधार पर और 23 दिसंबर, 2002 के प्रारंभिक जांच परिणाम सं. 14/35/2002-डीजीएडी के अनुसरण में वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने 27 जनवरी, 2005 की अधिसूचना सं. 5/2005-सी.शु. के तहत ईरान के मूल के या वहां से निर्यातित हैक्सामाइन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया।
6. जांच करने के बाद प्राधिकारी ने 11 अप्रैल, 2005 की अधिसूचना सं. 14/35/2002-डीजीएडी के तहत ईरान से हैक्सामाइन के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की। भारत सरकार द्वारा 30.6.2005 की अधिसूचना सं. 58/2005-सी.शु. के तहत निश्चयात्मक शुल्क लगाया गया था।
7. सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम, 1995 के अनुसार लगाया गया पाटनरोधी शुल्क यदि पूर्व में समाप्त न किया जाए तो वह लगाए जाने की ऐसी तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा परंतु यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत है कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह शुल्क के इस प्रकार के अधिरोपण की अवधि को समय-समय पर आगे और 5 वर्ष की अवधि के लिए बढ़ा सकती है।
8. उपर्युक्त उपबंधों के अनुसार मै. सिमालिन कैमिकल इंडस्ट्रीज और मै. केनोरिया कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि. ने इस प्रकार की समीक्षा का अनुरोध करते हुए एक याचिका के साथ प्राधिकारी से संपर्क किया। माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के रिट याचिका सं. 2006 की 16893 (इंडियन मेटल एंड कैरो एलायज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी), जिसमें यह निर्णय दिया गया था कि निर्णायक समीक्षा अनिवार्य है और इस प्रकार की समीक्षा नियमावली के नियम 23 के अनुसार करनी अपेक्षित होती है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के लिए कि क्या लागू शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति जारी रहेगी या उसकी पुनरावृत्ति होगी, अधिनियम

की धारा 9 (5) के अनुसार 29.2.2008 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना सं. 15/10/2007-डीजीएडी के तहत निर्णायक समीक्षा कार्रवाई शुरु की ।

ख. प्रक्रिया

9 इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

i) समीक्षा जांच शुरु करने के बाद प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावली का उत्तर और आवश्यक सूचना मांगते हुए घरेलू उद्योग, संबद्ध देशों में सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों एवं ज्ञात आयातकों को अधिसूचित किया;

ii) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को इस अनुरोध के साथ जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था कि वह अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें ।

iii) प्राधिकारी ने ईरान के ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना मांगते हुए प्रश्नावलियां भेजीं । संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली के उत्तर के साथ निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है । निर्यातक से निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह चाहा था कि वह नियमानुसार निर्धारित अवधि के भीतर सूचना प्रस्तुत करे ।

iv) वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 जनवरी, 2007 से 31 दिसंबर, 2007 (12 माह) तक की है । तथापि, क्षति विश्लेषण में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल 2005-मार्च, 2006 और अप्रैल 2006-मार्च, 2007 के वर्ष और जांच अवधि शामिल थी ।

v) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबन्धित वस्तु के आयातों के आंकड़ों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था ।

vi) संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों ने क्षति अवधि के लिए अपनी लागत एवं क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है ।

क. मै. सिमालिन कैमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड;

ख. मै. केनोरिया कैमिकल एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड;

vii) किसी अन्य हितबद्ध पार्टी ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का अपना उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है ।

viii) प्राधिकारी ने हुई क्षति की जांच करने और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) और आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का आवश्यक सीमा तक सत्यापन किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके

कि पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा;

(ix) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों की मौखिक सुनवाई करने के लिए 3 अक्टूबर, 2008 को मौखिक सुनवाई आयोजित की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था ।

x) प्राधिकारी ने विचाराधीन अनिवार्य तथ्यों का ब्यौरा देते हुए हितबद्ध पार्टियों को प्रस्तुत किए जाने के लिए 23.2.2009 को एक विस्तृत प्रकटन विवरण जारी किया और उस पर व्यक्त विचारों को वर्तमान जांच परिणामों में विधिवत शामिल किया गया है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और " समान वस्तु "

10 मूल जांच में शामिल उत्पाद हैक्सामेथाइलिन टेद्रामाइन था जिसे " हैक्सामाइन " के नाम से भी जाना जाता है । वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा है और किसी भी हितबद्ध पार्टी ने समीक्षा के क्षेत्र में संशोधन (कमी सहित) का अनुरोध करते हुए कोई निवेदन नहीं किया है । अतः इस जांच में मूल जांच में शामिल उत्पाद शामिल है ।

11 मूल जांच में शामिल विचाराधीन उत्पाद हैक्सामेथाइलिन टेद्रामाइन था जिसे बाजारी भाषा में " हैक्सामाइन " के नाम से भी जाना जाता है । हैक्सामेथाइलिन टेद्रामाइन एक सफेद रवादार पाउडर होता है जिसका मीठा धात्विक स्वाद होता है । शुद्ध रूप में यह रंगहीन और गंधहीन होता है । यह कमरे के तापमान को संतुलित रखता है । हैक्सामेथाइलिन टेद्रामाइन यौगिक को एम्मोफार्म, मैथेनामाइन, क्रिस्टामाइन, क्रिस्टोजन, यूरोट्रोपाइन के नाम से भी जाना जाता है । यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 और आईटीसी सं. 2921.2901 के अंतर्गत वर्गीकृत है ।

12 हैक्सामाइन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक उपयोग ठोस फैनोलिक रीजनों के विनिर्माण में होता है । अन्य प्रमुख उपयोग उच्च विस्फोटक साइक्लोनी के विनिर्माण में होता है । हैक्सामाइन जीवाणुरोधी होने के कारण इसका उपयोग मूत्र संबंधी विकारों के निवारण में किया जाता है ।

13 घरेलू उद्योग द्वारा भी समान विशेषताओं और विनिर्देशनों के हैक्सामाइन का उत्पादन किया जाता है । किसी भी हितबद्ध पार्टी ने न तो विचाराधीन उत्पाद या समान वस्तु के मुद्दे पर कोई तर्क दिया है और न ही जांच से किसी विपरीत तथ्य का पता चलता है; और इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु तथा ईरान में विनिर्मित और वहां से निर्यातित वस्तु पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तु है ।

घ. घरेलू उद्योग का आधार और क्षेत्र विस्तार

14 मूल जांच में मैसर्स केनोरिया केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष याचिका दायर की थी । वर्तमान जांच में मै. सिमालिन केमिकल इंडस्ट्रीज लि., बड़ौदा तथा मै. केनोरिया केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि., मुंबई ने याचिका दायर की है और यह दावा किया है कि ये दोनों पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं । इन दोनों कंपनियों का उत्पादन

भारतीय उत्पादन का लगभग 70% बनता है। अन्य ज्ञात भारतीय उत्पादक हैं- मै. सदर्न सिंथेटिक्स लि., मै. जय अम्बे गंगा केमिकल्स प्रा.लि., मै. आर.कैम इंडस्ट्रीज प्रा.लि. तथा मै. ईना कैम.। तथापि, इनमें से किसी पार्टी ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है और कोई सूचना प्रदान नहीं की है। जांच से इस बात के विपरीत किसी तथ्य का पता नहीं चला है जैसा कि याचिकाकर्ता ने दावा किया है और उसकी पुष्टि की है। नियमों तथा रिकार्ड में उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ सिमालिन कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. तथा मै. केनोरिया कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि. नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

ड. पाटन का निर्धारण

पाटन जारी रहना: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण

ईरान में सामान्य मूल्य

15. ईरान के किसी भी निर्यातक ने इस समीक्षा जांच के उत्तर में प्राधिकारी के समक्ष कोई अनुरोध नहीं किया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु याचिकाकर्ता को छोड़कर किसी भी हितबद्ध पार्टी ने प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। अतः प्राधिकारी वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ भारतीय निर्यातकों को असहयोगी घोषित करते हैं और उन्होंने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। याचिकाकर्ता द्वारा सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत के अनुमान के आधार पर किया गया है। भारतीय निर्यातकों से किसी उत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय को जोड़कर उत्पादन लागत के अनुमानों के आधारों पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। कारखाना सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उचित लाभ जोड़ा गया है। सामान्य मूल्य की गणना निम्नानुसार है :-

सामान्य मूल्य की गणना	रु./मी.ट.
कच्ची सामग्री	***
उपयोगिताएं	***
वेतन तथा भत्ते एवं अन्य उत्पादन व्यय	***
विनिर्माण लागत	***
बिक्री सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय	***
ब्याज लागत	***
उत्पादन की पूर्ण लागत	***
उचित लाभ	***
सामान्य मूल्य	***
सामान्य मूल्य (अम.डॉ.)	***

टिप्पणी: विनिमय दर 41.92=1 अम.डॉ.

ईरान से निर्यात की कीमत

16. ईरान के किसी भी निर्यातक ने इस समीक्षा जांच के उत्तर में प्राधिकारी के समक्ष कोई अनुरोध नहीं किया है। निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु याचिकाकर्ता को छोड़कर किसी भी

हितबद्ध पार्टी ने प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। अतः प्राधिकारी वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ भारतीय निर्यातकों को असहयोगी घोषित करते हैं और उन्होंने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।

17. याचिकाकर्ता द्वारा आंकड़ा संकलन एजेंसी द्वारा संकलित तथा प्रदत्त सूचना के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया था। ईरानी निर्यातकों से किसी उत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने आईबीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। चूंकि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में संबद्ध वस्तु के आयातों की संपूर्ण मात्रा प्रदर्शित नहीं होती है।

18. ईरान के निर्यातकों से असहयोग को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय हेतु कीमत समायोजन करने के बाद कारखाना निर्यात कीमत निर्धारित की है। इस प्रकार से निर्धारित निर्यात कीमत निम्नानुसार बनती है :-

आयात मात्रा (मी.ट.)	***
आयात मूल्य (लाख रुपए)	***
सीआईएफ निर्यात कीमत (अम.डा.)	***
घटाएं : समायोजन	***
समुद्री भाड़ा	***
बीमा	***
अंतरदेशीय भाड़ा	***
पत्तन प्रभार	***
बैंक प्रभार	***
बीमा	***
कुल समायोजन	***
कारखाना निर्यात कीमत	***

पाटन मार्जिन

19. कारखाना स्तर पर निर्धारित सामान्य मूल्य की तुलना कारखाना स्तर पर निर्धारित निवल निर्यात कीमत के साथ की गई है ताकि निम्नानुसार पाटन मार्जिन निर्धारित किया जा सके:

पाटन मार्जिन की गणना

	सामान्य मूल्य अम.डॉ./मी.ट.	कारखाना निर्यात कीमत अम.डॉ./मी.ट.	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
ईरान के सभी निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	32-37 %

20. संबद्ध देश से वर्तमान पाटन मार्जिन काफी अधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है।

पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति या उसमें कमी किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

घरेलू उद्योग के विचार:-

21. याचिकाकर्ताओं ने शुल्क समाप्ति की स्थिति में पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बारे में अपने तर्क के समर्थन में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क) वर्तमान पाटन मार्जिन का पर्याप्त स्तर
- ख) भारतीय बाजार में आकर्षक कीमत
- ग) विदेशी उत्पादकों का निर्यातानुखी होना
- घ) संबद्ध देश में निर्यातकों द्वारा सृजित क्षमता

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर ध्यान दिया है। घरेलू उद्योग ने आयात विश्लेषण हेतु निम्नलिखित तालिका के अनुसार आईबीआईएस (गौण स्रोत) के आंकड़ों पर अपनी याचिका में भरोसा किया है:-

ईरान से आयात	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
मात्रा	मी.ट.	260	200	240	280
मूल्य	लाख रुपए	75.36	64.76	97.07	117.26
कीमत	रु./किग्रा.	28.70	32.06	40.04	41.46

23. उपर्युक्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आयात की मात्रा स्थिर रही है और यह वर्ष 2005-06 में 200 मी.ट. के न्यूनतम स्तर से लेकर जांच अवधि में 280 मी.ट. के उच्चतम स्तर के बीच रही है। जहां तक प्रति इकाई कीमत का संबंध है, यह देखा गया है कि यह वर्ष 2004-05 में 28.70 रूपए प्रति किग्रा से लेकर जांच अवधि में 41.46 रूपए प्रति किग्रा. के बीच रही है। इससे यह पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयात की मात्रा में बमुश्किल कोई वृद्धि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 2006-07 और जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई कीमत एक समान रही है। इसके बावजूद पूर्ववर्ती पैराग्राफों में पाटन की पुष्टि की गई है। इससे यह पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद संबद्ध देश से पाटित कीमत पर आयात जारी रहे हैं, यद्यपि पाटनरोधी शुल्क से आयात की मात्रा सीमित हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क को वर्तमान पाटन स्तर से कम कर दिया जाता है या उसे समाप्त कर दिया जाता है तो सबद्ध देश से भारत में पाटित आयातों की भरमार होने की संभावना है।

24. आंकड़ों के अन्य स्रोतों के साथ उचित तुलना करने के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से आंकड़े प्राप्त किए। तथापि, प्राधिकारी ने यह पाया कि डीजीसीआईएंडएस

के आंकड़ों में संबद्ध देश से हुए आयात को कम दर्शाया गया है और जांच अवधि में आयात को केवल 40 मी.ट. सूचित किया गया है। अतः इस वजह से उचित विश्लेषण हेतु डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

25. प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस से आयातों की मात्रा के ब्यौरे प्राप्त करने की भी कोशिश की। तथापि, संबद्ध देश से विश्व भर को हुए निर्यातों के बारे में आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। जहां तक संबद्ध देश से भारत में हुए आयातों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसमें सूचित कुल मात्रा कमोबेश आईबीआईएस आंकड़ा स्रोत में सूचित मात्रा से मेल खाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की प्रति इकाई कीमत वही है, जैसी कि आईबीआईएस आंकड़ा स्रोत में सूचित की गई है। जांच अवधि के दौरान डब्ल्यूटीए में सूचित एफओबी कीमत 40 रुपए प्रति किग्रा. है, जबकि आईबीआईएस के आंकड़ों में 42.86 रुपए सीआईएफ की कीमत दर्शायी गई है। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि संभावना के परिदृश्य के निर्धारण हेतु आईबीआईएस आंकड़ा स्रोत पर भरोसा करना उचित है।

26. संबद्ध देश में उपलब्ध क्षमता के मुद्दे पर प्राधिकारी ने वैबसाइट से सूचना प्राप्त करने की कोशिश की जिससे यह नोट किया गया कि मै. साइना कैमिकल इंडस्ट्रियल कंपनी ने ईरान में हैक्सामाइन का एकमात्र विनिर्माता होने का दावा किया है और फोर्मालाइन तथा हैक्सामाइन के उनके वार्षिक उत्पादन से संबंधित उपलब्ध सूचना के अनुसार यह 66, 000 मी.ट. बनता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि ईरान जांच अवधि के दौरान औसतन केवल 250 मी.ट. की बिक्री भारत में करने में सफल हुआ है, यह देखा जाता है कि भारी मात्रा में उत्पादन करने के बावजूद वे मुख्यतः मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के कारण भारतीय बाजार में अत्यधिक घुसपैठ नहीं कर पाए हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देश से पाटन के खिलाफ एक कारगर साधन सिद्ध हुआ है।

च. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण

च.। हितबद्ध पार्टियों के विचार

घरेलू उद्योग के विचार

27. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में यह निष्कर्ष निकाला है कि यद्यपि घरेलू उद्योग के निष्पादन में वर्ष 2005-06 में मामूली सुधार हुआ है, तथापि इसमें वर्ष 2006-07 में पुनः गिरावट आई है। जांच अवधि के दौरान निष्पादन में मामूली सुधार हुआ किंतु यह इष्टतम से कम रहा। यही प्रवृत्ति उत्पादन, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, बिक्री आदि जैसे विभिन्न आर्थिक कारकों में देखी जा सकती है। वस्तुतः जांच अवधि में उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई। समग्र आधार पर घरेलू उद्योग की स्थिति प्रतिकूल बनी रही। इसके अलावा, इस चरण पर लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में इसके निष्पादन में और अधिक विकृति आएगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में दिए गए विभिन्न तर्कों पर ध्यान दिया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ईरान से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से आयातों के पाटन और उसके कारण हुई क्षति की संभावना के पहलुओं

की जांच करने से पूर्व घरेलू उद्योग को वर्तमान क्षति, यदि कोई हो, की जांच करने की कार्यवाही शुरू करते हैं ।

वर्तमान क्षति एवं कारणात्मक संबंध

29. पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) सामान्य उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का अनुवर्ती प्रभाव, दोनों की वस्तुपरक जांच का प्रावधान है । पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातों में निरपेक्ष रूप से या उत्पादन अथवा आयातक सदस्य में खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है । पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा अत्यधिक मात्रा में कीमतों में अवमूल्यन या कीमत वृद्धि जो कि अन्यथा काफी अधिक हुई होती, को रोकने के रूप में हुआ है ।

30. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमत संबंधी प्रभाव और कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की संचयी जांच की है ताकि पाटन की मौजूदगी तथा पाटन एवं क्षति, यदि कोई हो के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की जा सके । तदनुसार पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमत संबंधी प्रभाव की जांच निम्नानुसार की गई है:

च. II मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव

31. ईरान से पाटित आयातों की मात्रा तथा अन्य देशों से आयातों की मात्रा के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

i) आयात की मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा:

32. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात के ब्यौरों की जांच की है और उनकी तुलना इंटरनेशनल बिजनेस इन्फार्मेशन सर्विसेज (आईबीआईएस) द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के साथ की है । तुलना करने पर यह पाया गया था कि डीजीसीआईएस द्वारा सूचित आयात की मात्रा आईबीआईएस द्वारा सूचित आयात की मात्रा से कम है । अतः विश्लेषण हेतु आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त आंकड़ों पर भरोसा किया गया है । आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सूचना से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से आयात 280 मी.ट. के हुए थे । इसी अवधि के दौरान अन्य देशों से कुल आयात 803 मी.ट. से बढ़कर 3089 मी.ट. हो गए । जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा 9% था और जिस अन्य देश पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू था, उसका हिस्सा अन्य देशों की तुलना में 48% था । इन अन्य देशों का हिस्सा लगभग 43% था ।

विवरण	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
ईरान	मी.ट.	260	200	240	280
अन्य देश जिन पर शुल्क लागू है	मी.ट.	440	1,218	1,466	1,486
अन्य	मी.ट.	103	167	760	1,323
कुल आयात	मी.ट.	803	1,586	2,466	3,089

32. आंकड़ों से यह पता चलता है कि ईरान से आयात लगभग समान स्तर पर रहे थे । जिन अन्य देशों पर शुल्क लागू था, उनसे हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई थी । सूचना की विस्तृत जांच से यह पता चलता है कि इसमें मुख्यतः रूस से हुए आयात शामिल हैं जिस पर लागू पाटनरोधी शुल्क सेस्टेट के आदेश के बाद अत्यधिक बढ़ा दिया गया था । जिन अन्य देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं था, वहां से हुए आयातों में भी पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित होती है ।

ii) मांग, उत्पादन एवं बाजार हिस्सा

क) मांग तथा बाजार हिस्सा

सत्यापित आंकड़ों के आधार पर मांग एवं बाजार हिस्से से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है :-

	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
ईरान से आयात	मी.ट.	260	200	240	280
उन देशों से आयात जिन पर शुल्क पहले से लागू है	मी.ट.	440	1,218	1,466	1,486
अन्य देशों से आयात	मी.ट.	103	167	760	1,323
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
अन्य घरेलू उत्पादक	मी.ट.	***	***	***	***
घरेलू मांग	मी.ट.	11,356	11,798	12,120	13,546
मांग में हिस्सा					
ईरान से आयात	%	2.29	1.70	1.98	2.07
उन देशों से आयात जिन पर शुल्क पहले से लागू है	%	3.87	10.33	12.09	10.97
अन्य देशों से आयात	%	0.91	1.42	6.27	9.77
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	93	80	78

33. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि उत्पाद की मांग में लगातार वृद्धि हुई है और आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि में मांग में 19% से अधिक की वृद्धि हुई थी। यद्यपि ईरान से हुए आयातों का बाजार हिस्सा लगभग समान रहा था, तथापि अन्य देशों के बाजार हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई थी। अन्य देशों से हुए आयातों में चीन से हुए आयात शामिल थे जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है। इसके अलावा, यद्यपि क्षति अवधि में आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई, तथापि मांग में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई।

iii) घरेलू उद्योग का उत्पादन

34. सत्यापित सूचना से निम्नानुसार पता चलता है :

	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
स्थापित क्षमता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	100	100
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	103	84	95
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	103	84	95

35. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2005-06 में क्षमता का पूर्ण उपयोग करने के बाद आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में लगभग 5% की गिरावट आई। ऐसी स्थिति में जब क्षति अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई हो, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है।

iv) घरेलू उद्योग की बिक्री

36. सत्यापित सूचना से निम्नानुसार पता चलता है :

विवरण	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
घरेलू बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	97	86	93
निर्यात बिक्री	मी.ट.	116	-	-	-
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-	-	-

37. प्राधिकारी ने घरेलू एवं निर्यात बिक्री की जांच अलग से की है। आंकड़ों से यह पता चलता है कि उत्पाद की मांग में वृद्धि होने के बाद भी क्षति अवधि में घरेलू बिक्री में 7% की गिरावट आई।

च. III घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

38. संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत हास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारत औसत उत्पादन लागत, भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना ईरान से हुए आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

(i) कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

39. कीमत कटौती का निर्धारण समूची क्षति अवधि के दौरान ईरान से पाटित आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करने के बाद किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार तथा संबद्ध देश से आयात कीमत के बारे में आबीआईएस आंकड़ों में सूचित मूल्य में 1% हैंडलिंग प्रभार तथा लागू मूल सीमा शुल्क जोड़कर की गई है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने में घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त छूट एवं कमीशन तथा संदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में छूट प्रदान की गई है।

40. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ ईरान से आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित बिक्री कीमत के साथ की गई है।

विवरण	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	97	128	119
बिक्री कीमत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	128	117
पहुंच मूल्य	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	107	131	132
कीमत कटौती	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	64	111	31
कीमत कटौती	%	13-18	7-12	11-16	3-8
क्षतिरहित कीमत					***

कम कीमत पर बिक्री					***
कम कीमत पर बिक्री %					10-15

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ईरान से हुए आयात घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम पर हुए थे और इस प्रकार सकारात्मक कीमत कटौती हेतु ईरान से पाटित आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से काफी कम था ।

(ii) पाटित आयातों का कीमत हासकारी तथा न्यूनकारी प्रभाव:

42. पाटित आयातों के कीमत हासकारी प्रभाव की जांच भी उत्पादन लागत एवं निवल बिक्री प्राप्ति के संदर्भ में की गई है । उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में भारी वृद्धि हुई है । घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि भी नहीं कर सका । तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि से क्षति जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत की वसूली हो गई थी ।

च. IV क्षति के अन्य मापदंडों की जांच

43. जिन अन्य आर्थिक मापदंडों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है, उनका विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

(i) उत्पादकता

44. घरेलू उद्योग की उत्पादकता का आकलन उत्पादन की श्रम उत्पादकता के संदर्भ में किया गया है और यह पाया गया है कि वर्ष 2006-07 में उत्पादकता में गिरावट आई किंतु उसमें जांच अवधि में एक बार फिर वृद्धि हो गई ।

विवरण	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	100	82	91

(ii) लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय एवं नकद प्रवाह

45. सत्यापित सूचना से निम्नानुसार पता चलता है :-

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
बिक्री की लागत	रु./मी.टन.	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचकांक	100	97	128	118
बिक्री कीमत	रू./मी.टन.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	128	118
लाभ/हानि	रू./मी.टन.	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	119	(132)	(212)
कुल लाभ/हानि	लाख रूपए	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	115	(113)	(197)
नकद लाभ/हानि	लाख रूपए	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	523	(177)	(400)
लगाई गई पूंजी पर आय	%	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	777	(112)	(328)

46. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2005-06, जब उसने लाभ कमाया था, को छोड़कर, विचाराधीन उत्पाद के संबंध में लगातार वित्तीय घाटा हुआ है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में पूर्ववर्ती वर्ष और आधार वर्ष दोनों की तुलना में आगे और गिरावट आई।

47. नकद लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय में भी वही प्रवृत्ति दिखाई देती है जैसी कि लाभ के संबंध में है।

(iii) रोजगार तथा मजदूरी

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	103	103	105
मजदूरी	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	103	119	135
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101	116	128

48. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग के पास कर्मचारियों की संख्या लगभग समान रही है। मजदूरी में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित होती है।

iv) पूंजी जुटाने की क्षमता

घरेलू उद्योग ने क्षति अधि के दौरान क्षमता में कोई वृद्धि नहीं की है ।

v) पाटन की मात्रा

संबद्ध देश के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है ।

vi) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

49. प्राधिकारी ने कीमत संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हो, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी घटकों की कीमत की जांच की है ताकि पाटित आयातों से इतर कारकों का विश्लेषण किया जा सके जिनसे घरेलू उद्योग की कीमत प्रभावित हो सकती है । तथापि जांच अवधि के दौरान घरेलू मांग में वृद्धि हुई है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के भागीदार उत्पादकों का हिस्सा कुल घरेलू मांग का लगभग 55% बनता है ।

vii) मालसूचियां

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07-दिसं.07
समयावधि के अंत में मालसूचियां	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	438	112	161
उत्पादन के % के रूप में मालसूचियां	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	425	133	169

50. घरेलू उद्योग के आंकड़ों से यह पता चलता है कि मांग में वृद्धि के बावजूद जांच अवधि के दौरान पूर्ववर्ती वर्ष और आधार वर्ष दोनों की तुलना में मालसूची के स्तरों में वृद्धि हुई है ।

च.V क्षति का समय निर्धारण

51. यह देखा गया है कि संबद्ध देश से आयात की मात्रा लगभग एक समान रही है । आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही थी और आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम थी । इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती होगी और कम कीमत पर बिक्री होगी । यदि घरेलू उद्योग को अपनी कीमत आयातों की पहुंच कीमत के बराबर करनी है तो उसे और अधिक घाटा होगा । जहां तक विभिन्न क्षति मापदंडों के बारे में घरेलू उद्योग के निष्पादन का संबंध है, यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, बिक्री, बाजार हिस्से, क्षमता उपयोग, मालसूची, के कारण एक बार फिर गिरावट आई है । लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद प्रवाह इष्टतम स्तर से कम रहा है । अतः घरेलू उद्योग का निष्पादन नाजुक बना रहा है ।

च.VI अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध

52. प्राधिकारी ने इस बात की निम्नानुसार जांच की है कि क्या अन्य ज्ञात कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है:

अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

53. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से भिन्न ऐसे कई अन्य देशों से आयात हुए हैं जिनमें वे देश भी शामिल हैं जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू था। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू था, उन देशों से हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जिन देशों पर शुल्क लागू नहीं था, उन देशों से भी आयातों में वृद्धि हुई है।

मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

54. जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में लगभग 19% की वृद्धि प्रदर्शित हुई है। मांग में संभावित कमी से यह प्रतीत नहीं होता है कि उपर्युक्त मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ा है।

विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

55. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है। अतः यह कारक घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

च.VII प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात निष्पादन

56. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के रूप में किसी भी हितबद्ध पार्टी ने प्रौद्योगिकी या प्रौद्योगिकी से संबंधित मुद्दे नहीं उठाए हैं। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग वर्ष 2005-06 से निर्यात बाजार में नहीं है। अतः इस कारक से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है।

च.VIII घरेलू उद्योग की उत्पादकता

57. श्रमिक, उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कुछ गिरावट प्रदर्शित होती है। तथापि, उत्पादकता में गिरावट कोई क्षति पहुंचाने के लिए नगण्य है।

च.IX क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

58. घरेलू उद्योग के लागत आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित संबद्ध वस्तु की क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ ईरान से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

छ. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

59. ईरान के उत्पादकों/निर्यातकों ने पाटित कीमतों पर निर्यात जारी रखा है। वर्तमान जांच एक समीक्षा जांच है और निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या

शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इस मामले में चूंकि सतत पाटन हो रहा है, इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उत्पाद का पाटन जारी रहने की संभावना है। संबद्ध देश के निर्यातकों और उत्पादकों द्वारा गत कई वर्षों से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है। वर्तमान पाटन मार्जिन काफी अधिक है। पूर्व में संपन्न जांच में भी पाटन मार्जिन काफी अधिक था। ऐसी स्थिति में इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि शुल्क समाप्त किए जाने पर पाटन की मात्रा में वृद्धि नहीं होगी। यद्यपि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में उल्लेखित आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देश से आयातों की मात्रा कमोवेश समान रही है और यह वर्ष 2004-05 में 200 मी.टन से लेकर जांच अवधि में 280 मी.टन के बीच रही है। तथापि, ऐसा मुख्यतः पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण हुआ है। ईरान के निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु के भारी उत्पादन और उनके निर्यातों में वृद्धि होने की बात पर ध्यान रखते हुए और भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि को देखते हुए पाटनरोधी शुल्क में किसी भी प्रकार की संभावित कमी या उसकी समाप्ति से पाटित आयातों में होने वाली वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

पाटन की संभावना

60. किसी निर्णायक समीक्षा जांच में पाटन की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी द्वारा उसी कार्यप्रणाली और प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है जिनका उपयोग मूल जांच में होता है। पाटन मार्जिन की पुनर्गणना भी अद्यतित अवधि के लिए की जाती है।

संप्रति एवं गत पाटन मार्जिन का स्तर

61. पूर्ववर्ती जांच में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन और अब निर्धारित पाटन मार्जिन पर विचार करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्यात पाटित कीमतों पर जारी है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उनके जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा, क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक कीमत कटौती के कारण पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में आयातों की मात्रा में आगे और वृद्धि होने की संभावना है।

भारतीय बाजार की आकर्षक कीमत

62. ईरान द्वारा भारत को जिस कीमत पर सामग्री का निर्यात किया जा रहा है वह भी पाटन जारी रहने का एक कारण है। पहुंच कीमत के स्तर पर अत्यधिक कटौती हुई है। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर विदेशी क्रेताओं के लिए भारतीय कीमतें अत्यधिक आकर्षक बन जाएंगी और इस बात की प्रबल संभावना है कि भारतीय उपभोक्ताओं द्वारा मांग में वृद्धि के कारण अत्यधिक मात्रा में आयात किया जाएगा।

विदेशी उत्पादकों का निर्यातोन्मुखी होना

63. वैबसाइट पर उपलब्ध सूचना और मूल जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा किए गए पत्राचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि मैसर्स साइना कैमिकल इंड कंपनी ईरान में संबद्ध वस्तु की एकमात्र विनिर्माता है और हैक्सामाइन तथा फॉर्मालिन का उनका वार्षिक उत्पादक 66,000 मी.ट. का है। मूल जांच अवधि के दौरान उन्होंने मुख्यतः भारत, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान, स्पेन,

मलेशिया आदि को निर्यात किया था और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने कोई घरेलू बिक्री नहीं की है। वर्तमान जांच में निर्यातक के असहयोग के कारण उत्पादन क्षमता, वास्तविक उत्पादन, निर्यात, घरेलू खपत आदि के बारे में सूचना उपलब्ध नहीं है। तथापि, मूल जांच अवधि के दौरान उपलब्ध आंकड़ों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संबद्ध निर्यातक मूलतः एक निर्यातोन्मुखी कंपनी है। लागू पाटनरोधी शुल्क से पाटित कीमतों पर भारत में उनकी वस्तु के पाटन को सफलतापूर्वक रोकने में मदद मिली है।

छ. अंतिम जांच:

64. हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों, उपलब्ध कराई गई सूचना और किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पार्टियों के अनुरोधों अथवा उपर्युक्त जांच परिणामों में दर्ज अनुरोधों के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एवं पाटन एवं क्षति की वर्तमान एवं संभावित तथा पाटन एवं क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की स्थिति के बारे में उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- i) भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही है और ईरान से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक है।
- ii) संबद्ध वस्तु का पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश किए जाने की संभावना है और ईरान से हुए आयातों के संबंध में संभावित पाटन मार्जिन काफी अधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक है।
- iii) वर्तमान उपाय वापस लिए जाने की स्थिति में भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु के पाटित कीमतों पर प्रवेश करने की संभावना है।
- iv) यद्यपि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपने निष्पादन में सुधार किया है, तथापि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को पर्याप्त क्षति जारी रहेगी। इसके अलावा, वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को हुई क्षति जारी रहने और उसमें वृद्धि होने की संभावना है।

झ. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

65. प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में पाटनरोधी उपायों द्वारा कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन की पद्धतियों द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का हास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो या उससे अधिक स्रोत बनाए रख सकेंगे।

66. पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ट. सिफारिशें

67. इस संबंध में निष्कर्ष निकालने के बाद कि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में ईरान से होने वाले आयातों के जारी रहने या पाटन पुनः शुरू करने और उसकी वजह से क्षति होने की संभावना है। प्राधिकारी का मत यह है कि ईरान से हुए आयातों के संबंध में उपाय की अवधि को आगे बढ़ाया जाना अपेक्षित है।

68. लागू वर्तमान उपाय को समाप्त किए जाने की स्थिति में वर्तमान पाटन और आसन्नवर्ती पाटन की जांच करने के बाद प्राधिकारी भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग-1, खंड-1, दिनांक 11-4-2005 में प्रकाशित अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना संख्या 14/35/2002-डीजीएडी, के तहत प्राधिकारी द्वारा संस्तुत दिनांक 14.4.2005 तथा केन्द्र सरकार द्वारा 30.6.2005 की अधिसूचना सं. 58/2005-सी.शु. द्वारा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क का प्रवर्तन जारी रखने की सिफारिश करते हैं।

69. केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध इस सिफारिश से उत्पन्न होने वाली कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th February, 2009

Final Findings

Subject : Sunset Anti-dumping review investigations in the matter relating to imports of Hexa Methylene Tetramine (Hexamine) originating in or exported from the Islamic Republic of Iran

No. 15/10/2007-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

A BACKGROUND OF THE CASE

1. M/s. Kanoria Chemicals & Industries Ltd., Mumbai had earlier filed an anti-dumping petition before the Designated Authority, alleging dumping of Hexamine originating in or exported from Islamic Republic of Iran. The said

petition was supported by M/s. Simalin Chemicals Industries Ltd., Baroda and M/s. Rockhard Petro Chemical Industries Ltd., Indore and M/s. Newton Engineering & Chemicals Ltd, Baroda. The period of investigation was from 1st April 2001 to 30th June 2002. The Petitioner accounts for 35.62% of the total production in the POI and the petitioner and supporter together accounted for 100% of the total Indian production.

2. The Designated Authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, recommended imposition of provisional duty vide notification dated 23rd December 2002 and provisional duty was imposed by the Govt. of India, vide notification No. 42/2003 dated 17th March 2003.

3. After notification of Preliminary Findings, M/S Sina Chemicals Industry Co., Iran showed its willingness to extend price undertaking in accordance with rules. The exporter also conveyed that after the undertaking is accepted, the investigation should be terminated as there was no other producer of Hexamine in Iran. The domestic industry also requested to the Designated Authority to accept the price undertaking being given by the exporter and suspend the investigation. The Authority, in term of Rule 15 of Anti-Dumping Rules, accepted price undertaking from M/s. Sina Chemicals Industry Co. and accordingly suspended the investigation vide notification dated 17th September 2003.

4. M/s. Kanoria Chemicals & Industries Ltd. made a written representation on 27.4.2004 alleging violation of price undertaking by M/s Sina Chemicals Industry Co. and on examination of information provided by the exporter from time to time, in pursuance of Rule 5 of Anti-dumping Rules, the Authority decided to terminate the price undertaking given by M/s. Sina Chemicals Industry Co. and withdrew the suspension of investigation Order dated 17th September 2003.

5. Based on notification No. 14/35/2002-DGAD dated 15th October 2004 withdrawing the suspension of investigation Order dated 17th September 2003 and in pursuance of preliminary findings No. 14/35/2002-DGAD dated 23rd December 2002, the Ministry of Finance, Govt. of India vide notification No. 5/2005-Customs dated 27th January 2005 imposed anti-dumping duty on hexamine originating in or exported from Iran.

6. After conducting the investigation, the Authority recommended definitive anti-dumping duty on imports of Hexamine from Iran vide Notification No.14/35/2002-DGAD dated 11th April 2005. Definitive duty was imposed by the Govt. of India vide Notification No.58/2005-Customs dated 30.06.2005.

7. In terms of the Customs Tariff (Amendment) Act 1995 the antidumping duty imposed shall unless revoked earlier, cease to have effect on expiry of five years from the date of such imposition. Provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may from time to time extend the period of such imposition for a further period of five years.

8. In terms of the above provisions, M/s Simalin Chemical Industries and M/s Kanoria Chemicals and Industries Limited approached the authority with a petition requesting for such a review. In view of the judgment of the Hon'ble Delhi High Court in the Writ Petition No 16893 of 2006 (Indian Metal & Ferro Alloys Ltd Vs Designated Authority) holding that sunset review is mandatory and such review is required to be carried out in terms of Rule 23 of the Rules, the Designated Authority initiated the sunset review proceedings Vide Initiation Notification No. 15/10/2007-DGAD dated 29.02.2008 in accordance with Section 9 A (5) of the Act, to examine whether cessation of the duty in force would lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

B. PROCEDURE

9 The procedure described below has been followed with regard to this investigation:

i) After initiation of the review investigation, the Authority notified the domestic industry, all known exporters/producers in the subject countries and known importers, calling for questionnaire responses and necessary information in accordance with Rule 6(4);

ii) The Embassy of the subject countries in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.

- iii) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the known exporters from Iran. None of the exporters from subject country have responded to the Designated Authority with prescribed questionnaire response. The exporter was required to furnish information desired by the Designated Authority within a stipulated period as per the Rules.
- iv) The period of investigation for the purpose of the present review is 1st Jan 2007 to 31st Dec 2007 (12 months). However, injury analysis covered the years April'2004-March'2005, April'2005-March'2006 and April'2006-March'2007 and POI.
- v) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigations.
- vi) The following domestic producers of the subject goods have provided their cost and injury information for injury investigation.
- a. M/s Simalin Chemical Industries Limited;
 - b. M/s Kanoria Chemical & Industries Limited;
- vii) No other interested parties have filed their response to the initiation notification.
- viii) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent necessary to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- ix) The Authority held a public hearing on 3^{ed} Oct. 2008 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of domestic industry.
- x) The Authority issued a detailed Disclosure Statement on 23.2.2009 for submission to the interested parties giving thereby essential facts under consideration and views expressed thereon have been duly incorporated in the present findings.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

10 The product involved in the original investigation was Hexa Methylene Tetramine also known as 'Hexamine'. The present investigation is a sunset review

and none of the interested parties have made any submission requesting modification (including curtailment) in the scope of the review. Therefore, the investigation covers the product covered in the original investigation.

11 The product under consideration in the original investigation was Hexa Methylene Tetramine, also known as Hexamine in market parlance. Hexa Methylene Tetramine is a white crystalline powder with a sweet metallic taste. In the pure form, it is colourless and odourless. It crystallizes in room temperature. Hexa Methylene Tetramine compound is also known as Ammoform, Methenamine, Cystamine, Cystogen, Urotropine. It is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 and ITC no. 2921.2901.

12 The Most important industrial use of Hexamine is for the manufacture of solid phenolic resins. The other important use is for the manufacture of a high explosive cyclonite. Hexamine being anti-bacterial in action is used as a urinary antiseptic.

13 The domestic industry also produces Hexamine having similar characteristics and specifications. No argument has been extended, by any interested party, on the issue of product under consideration or like article, nor the investigation has shown any facts to the contrary; and therefore, the Authority holds that the goods being manufactured by the domestic industry and the goods being manufactured and exported from Iran are like article as per Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules.

D. Standing and scope of the Domestic Industry

14 In the original investigations, M/s Kanoria Chemicals & industries Ltd. had filed the petition before the Designated Authority. In the present investigation M/s Simalin Chemical Industries Ltd., Baroda and M/s Kanoria Chemicals & industries Ltd., Mumbai have filed the petition and claimed that the two constitute domestic industry within the meaning of the Anti Dumping Rules. Production of these two companies constitute approx 70% of Indian production. Other known Indian Producers are M/s. Southern Synthetics Ltd., M/s. Jai Ambe Ganga Chemicals Pvt Ltd, M/s. R. Chem Industries Pvt Ltd., and M/s Ena Chem. However, none of these parties have responded to the Authority and provided any information. The investigation has not shown any fact to the contrary to what has been claimed and established by the petitioner. Having regard to the Rules and information on record, the Authority holds that Simalin Chemical Industries Ltd. and M/s Kanoria Chemicals & industries Ltd constitute domestic industry for the purpose of the present investigations within the meaning of the Rules.

E. DUMPING DETERMINATION

Continuance of Dumping: Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins:

Normal Value in Iran

15. None of the exporters from Iran made any submission before the Authority in response to this review investigation. None of the interested parties other than petitioner have provided any information to the Authority to enable determination of normal value. Therefore, the Authority declares the Iranian exporters as non cooperative for the purpose of the present investigations and has determined normal value based on best information available. The normal value has been determined by the petitioner on the basis of estimates of cost of production. In the absence of any response from the Iranian exporters, the Authority has determined normal value on the basis of estimates of cost of production, with addition of selling, general and administrative expenses. Reasonable profit has been added to determine ex-factory normal value. Calculation of normal value is given below:

Computation of Normal Value	Rs/MT
Raw materials	***
Utilities	***
Salary & wages & Other production expenses	***
Manufacturing cost	***
Selling, general & administrative cost	***
Interest cost	***
Full cost of production	***
Reasonable profit	***
Normal value	***
Normal value (US\$)	***

Note: Exchange Rate Rs.41.92=1 US\$

Export Price from Iran

16. None of the exporters from Iran made any submission before the Authority in response to this review investigation. None of the interested parties other than petitioner have provided any information to the Authority to enable determination of export price. Therefore, the Authority declares the Iranian exporters as non cooperative for the purpose of the present

investigations and proposes to determine export price based on best information available.

17. The export price was determined by the petitioner on the basis of information compiled and provided by data compiling agency. In the absence of any response from the Iranian exporters, the Authority has determined export price on the basis of data made available by IBIS since DGCI&S data does not reflect full volume of imports of the subject goods.

18. In view of non-cooperation from the Iran exporters, the Authority has determined ex-factory export price after making price adjustments for ocean freight, insurance, commission, port-expenses. The export price so determined comes as under -

Import volume (MT)	***
Import value (Rs.Lacs)	***
CIF export price (US \$)	***
Less : Adjustments	***
Ocean Freight	***
Insurance	***
Inland Freight	***
Port Charges	***
Bank charges	***
Insurance	***
Total Adjustments	***
Ex-factory Export Price	***

Dumping Margin

19. The normal value determined at the ex-factory level has been compared with the net export price determined at the ex-factory level to determine the dumping margins as follows:

Dumping Margin Calculations

	Normal Value	Ex-factory Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
	US\$/ MT	US\$/ MT		
All Exporter / producer from Iran	***	***	***	32-37 %

20. The current dumping margin from the subject countries has been found to be significant and above de minimis level.

Likelihood of continuance or recurrence of Dumping in the event of withdrawal or reduction of Anti dumping Duty.

Views of the domestic Industry:-

21. The Petitioners have submitted the following in support of their argument for likelihood of continuation or recurrence of dumping in the event of revocation of duty:

- a) Significant level of current dumping margin .
- b) Price attractiveness of Indian market.
- c) Export orientation of foreign producers.
- d) Capacity created by the exporters in the subject country.

Examination by the Authority

22. Authority has taken note of various submissions made by the domestic Industry. The domestic industry in its petition has relied upon IBIS (secondary source) data for import analysis as per following table:-

Imports from Iran	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Quantity	MT	260	200	240	280
Value	Rs.lacs	75.36	64.76	97.07	117.26
Price	Rs./Kg	28.70	32.06	40.04	41.46

23. Analysis of the above data shows that the volume of imports has remained consistent and ranges from the lowest level of 200 MT in 2005-06 to the highest level of 280 MT during POI. As far as per unit price is concerned it is seen that the same ranges from Rs.28.70 per kg in 2004-05 to Rs.41.46 per KG during POI. This indicates that there is hardly any spurt in volume of imports from the subject country during the injury period. Similarly, per unit prices have remained in the same level during 2006-07 and the POI. Despite this, dumping has been established in the preceding paragraphs. This indicates that in spite of the anti dumping duty in place imports from the subject country continued at dumped price, although the anti dumping duty has restricted the volume of imports. The Authority notes that in case the anti dumping duty is

either reduced to the present level of dumping or revoked, it is likely to open flood gates for dumped imports in to India from the subject country.

24. To make a fair comparison with other sources of data the Authority procured data from DGCI&S. However, the Authority found that the DGCI&S data is under-reported from the subject country and during POI the same was reported to be only 40 MT. On this score therefore DGCI&S data cannot be relied upon for a fair analysis.

25. The Authority also tried to obtain the details on volume of imports from World Trade Atlas. However, the data regarding exports from the subject country to world over was not available. As regards imports in to India from the subject country Authority notes that the total volume reported therein more or less matches with the volume reported under IBIS data source. From the same it is also evident that the per unit price of the subject good's imports from the subject country stands at same level as reported in IBIS data source. During POI the FOB price reported in WTA is Rs.40 per KG, where as IBIS data shows a price of Rs.42.86 per KG, CIF. The Authority therefore notes that reliance on IBIS data source is appropriate for determination of likelihood scenario.

26. On the issue of available capacity in the subject country the authority tried to obtain information from the website where it is noted that M/s-Sina Chemical Industrial Company has claimed to be the sole manufacturer of Hexamine in Iran and as per available information their annual production of Formaline and Hexamine is 66,000 MT. Considering the fact that Iran has been able to offload in to India only 250MT on an average during injury investigation period, it is evident that inspite of producing huge volumes they have not been able to penetrate into Indian market in a big way primarily due to the existing anti dumping duty. Thus it is evident that anti dumping duty has proved to be an effective instrument against dumping from the subject country.

F. INJURY AND CAUSAL LINKS DETERMINATION

F.I Views of the interested parties

Views of the Domestic Industry

27. The domestic industry, in its submissions has concluded that even though performance of the domestic industry marginally improved in 2005-06, the same deteriorated once again from 2006-07. During POI, the performance marginally improved but still remained sub-optimal. The same trend can be seen in various economic factors such as production, capacity utilization, productivity,

sales, etc. In fact, production, sales & capacity utilization declined in the investigation period. On overall basis, the situation of the domestic industry continued to remain adverse. Further, the performance would at best deteriorate further, should the anti dumping duty in force be revoked at this stage.

Examination by the Authority

28. The Authority has taken note of various arguments raised with regard to injury to the domestic industry. The Authority notes that the current dumping margin from Iran is above *de minimis* level. The Authority therefore, proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject countries.

Current Injury and causal link

29. Article 3.1 of the Anti Dumping Act and Annexure II of the Anti Dumping Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

30. For the purpose of current injury analysis, the Authority has cumulatively examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. Accordingly, the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

F.II VOLUME EFFECT: Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

31. The effects of the volume of dumped imports from Iran as well as imports from other countries have been examined as follows:

i) Import volumes and share of subject countries:

32. The Authority has examined the details of imports provided by DGCIS and compared the same with the data provided by International Business Information Services (IBIS). On comparison, it was found that volume of imports reported by DGCIS is lower than the volume of imports reported by IBIS. Therefore, the data provided by the IBIS has been relied upon for analysis. Information provided by IBIS shows that imports from the subject country was 280 MT. During the same period, total imports from all countries increased from 803MT to 3089 MT. Share of the subject countries in total imports during POI was 9%, and other country already attracting antidumping duty was 48% as compared to the other countries whose share was approximately 43%:

Particulars	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07 - Dec'07
Iran	MT	260	200	240	280
Other Countries attracting duty	MT	440	1,218	1,466	1,486
Others	MT	103	167	760	1,323
Total Imports	MT	803	1,586	2,466	3,089

32. The data shows that the import from Iran remained almost at the similar levels. Imports from the other countries attracting duty increased significantly. Detailed examination of the information shows that these primarily include imports from Russia, where the anti dumping duty were substantially enhanced after the order from the CESTAT. Import from other countries not subject to antidumping duty also shows significant increase.

ii) Demand, Output and Market shares

a) Demand and Market Share

On the basis of verified data, the position with regard to demand and market share is as follows -

	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Imports from Iran	MT	260	200	240	280
Imports from Countries- Already attracting duty	MT	440	1,218	1,466	1,486
Imports from Other Countries	MT	103	167	760	1,323
Sales of domestic industry	MT	***	***	***	***
Other Domestic Producers	MT	***	***	***	***
Domestic Demand	MT	11,356	11,798	12,120	13,546
Share in Demand					
Imports from Iran	%	2.29	1.70	1.98	2.07
Imports from Countries- Already attracting duty	%	3.87	10.33	12.09	10.97
Imports from Other Countries	%	0.91	1.42	6.27	9.77
Sales of domestic industry	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	93	80	78

33. The above data shows that there has been continued growth in demand for the product and demand during POI was higher by over 19% over base year 2004-05. While market share of imports from Iran remained almost at the same level, market share of other countries increased significantly. Imports from other countries included imports from China, which are not subject to anti dumping duties. Further, whereas market share of imports increased over the injury period, market share of the domestic industry decreased inspite of growth in demand.

iii) Production of the Domestic Industry

34. Verified information shows as follows

	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07 - Dec'07
Installed capacity	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	100	100	100
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	103	84	95
Capacity utilization	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	103	84	95

35. The above data shows that capacity utilization of the domestic industry declined by about 5% in the POI as compared to the base year after archiving full capacity utilization 2005-06. In a situation where the demand for the product increased during the injury period, the capacity utilization of the domestic industry declined as compared to the base year.

iv) Sales of Domestic Industry

36. Verified information shows as follows

Particulars	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07 - Dec'07
Domestic sales	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	97	86	93
Export sales	MT	116	-	-	-
Trend	Index	100	-	-	-

37. Authority has examined domestic and export sales separately. The above data shows that domestic sales declined by 7% over the period, in a situation where the demand for the product increased.

F.III Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

38. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from Iran.

(i) Price undercutting and underselling effects

39. Price undercutting has been determined by comparing the landed value of dumped imports from Iran over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose, landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data of import prices from the subject country. In determining the net sales realization of the domestic industry, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

40. For the purpose of price underselling determination landed price of imports from Iran has been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry, determined for the POI.

Particulars	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07 - Dec'07
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	97	128	119
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	100	128	117
Landed Value	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	131	132
Price undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	64	111	31

Price undercutting	%	13-18	7-12	11-16	3-8
Non-injurious price					***
Price underselling					***
Price Underselling %					10-15

41. The Authority notes that imports from Iran were below the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in positive price undercutting. Landed value of dumped imports from Iran were substantially below the non-injurious price of the domestic industry.

(ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

42. The price suppression effects of the dumped imports have also been examined with reference to the cost of production and net sales realization. The above data shows that the cost of production of the subject goods have significantly increased compared to the base year. The domestic industry was able to increase its selling prices as well. However, the increase in the selling prices were insufficient to permit recovery of cost of production during period of Investigation.

F.IV Examination of other Injury Parameters

43. Other economic parameters, which could indicate existence of injury to the domestic industry, have been analyzed here as follows:

(i) Productivity

44. Productivity of the domestic industry has been measured in terms of its labour productivity of the output and it was noticed that the productivity declined in 2006-07, but increased thereafter once again in POI.

Particulars	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07- Dec'07
Productivity per employee	***	***	***	***
Trend	100	100	82	91

(ii) Profits, return on capital employed and cash flow

45. Verified information shows as follows

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	97	128	118
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	100	128	118
Profit/Loss	Rs. MT	(***)	***	(***)	(***)
Trend	Index	100	119	(132)	(212)
Total Profit/Loss	Rs. Lacs	(***)	***	(***)	(***)
Trend	Index	100	115	(113)	(197)
Cash Profit/Loss	Rs. Lacs	(***)	***	(***)	(***)
Trend	Index	100	523	(177)	(400)
Return on capital employed %		(***)	***	(***)	(***)
Trend	Index	100	777	(112))(328)

46. It is seen that the domestic industry is suffering continued financial losses with regard to the product under consideration except 2005-06 when it could earn profits. Profitability of the domestic industry further deteriorated during POI both as compared to preceding year as well as base year.

47. Cash profits and return on capital employed showed the similar trend as that of profits.

(iii) Employment and wages

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Number of Employee	Nos.	***	***	***	***
Tren	Index	100	103	103	105
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	103	119	135
Wage per Employee	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	101	116	128

48. It is seen that number of employees with the domestic industry has remained in almost the same region. The wages show normal wage increases.

iv) Ability to raise capital

The domestic industry has not made any capacity addition during the injury period.

v) Magnitude of Dumping

The dumping margin determined for the subject country is above de minimis level.

vi) Factors affecting prices

49. The Authority has examined the change in cost structure if any, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. However, domestic demand has increased during the POI. The Authority also notes that the participating producers of the subject goods account for about 55% of total domestic demand.

vii) Inventories

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Inventories - at the end of period	MT	***	***	***	***

Trend	Index	100	438	112	161
Inventories as % of Production	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	425	133	169

50. The data of the domestic industry shows that inspite of growth in demand, The inventory levels have increased during POI both as compared to preceding year as well as base year.

F.V Overall assessment of Injury

51. It is seen that the volume of imports from the subject country has remained almost at similar level. The imports were undercutting the prices of the domestic industry and landed price of imports were below the non-injurious price of the domestic industry. Thus, the domestic industry would suffer price undercutting and price underselling in the event of revocation of anti dumping duties. If the domestic industry were to match the landed price of imports, it would suffer even higher losses. With regard to performance of the domestic industry on various injury parameters, it is seen that performance of the domestic industry deteriorated once again on account of production, sales, market share, capacity utilization, inventories. Profit/loss, return on investment and cash flow continued to be sub-optimal. The performance of the domestic industry therefore continues to be fragile.

F.VI Other Known factors and Causal Link

52. The Authority examined whether other known factors could have caused injury to the domestic industry as follows:

Volume and prices of imports from other sources

53. During the POI, other than the subject countries, imports have taken place from a number of other countries including countries against which antidumping duty is in force. The data also shows that imports from countries attracting antidumping duty have increased substantially. Imports from countries not attracting duty have also increased.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

54. Domestic demand of the product under consideration has shown an increase of about 19% during the POI. Possible contraction in demand does not seem to have affected the domestic industry in volume parameters.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

55. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not have been reason to cause injury to the domestic industry

F.VII Development of technology and export performance

56. Technology or technology related issues have not been raised by any interested party as cause of injury to the domestic industry. It is noted that domestic industry is not in the export market since 2005-06. Therefore this factor is not causing injury to the domestic industry.

F.VIII Productivity of the Domestic Industry

57. Productivity of the domestic industry in terms of labour, output has shown some decline. However, decline in productivity is insignificant to have caused any injury.

F.IX Magnitude of Injury and injury margin

58. The non-injurious price of the subject goods, determined for the domestic industry taking into account the cost data of the domestic industry, has been compared with the landed value of imports from Iran for determination of the injury margin.

6. Likelihood of continuation or recurrence of injury

59. Producers/exporters from Iran have continued to export at dumping prices. Present investigation is a review investigation and the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In this case, as there are continued dumped imports, Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product. Exporters and producers from the subject country are exporting subject goods to India for the past several years. The current dumping margin is very significant. In the previously concluded investigation also dumping margin was significant. In such a situation, there is no reason to believe that the dumping will not intensify with the revocation of duty. Although from the data in the preceding paragraphs, it is evident that the volume of imports from the subject country has remained more or less consistent and ranges from 200MT during 2004-05 to 280MT during the POI, it is primarily due to the operative anti-dumping duty. Considering the huge production of the subject goods by the

exporter in Iran and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood any reduction or revocation of the anti-dumping duty may lead to spurt in the dumped imports injuring the domestic industries

Likelihood of Dumping

60. To examine the likelihood of dumping in a sunset review investigation, the Authority applies the same methodology and the procedure as are applied in original investigations. The dumping margin is also recalculated for the updated period.

Level of current and past dumping margin

61. Considering the dumping margin determined by the Authority in the previous investigation and the dumping margin now assessed, it is quite evident that the exports were continued to be made at dumping prices and is likely to continue with revocation of anti dumping duties. Further, the volume of imports is likely to increase further in the event of revocation of anti dumping duties, given the significant price undercutting during the injury period.

Price attractiveness of Indian market

62. The price at which material is being exported by Iran to India is also an indicator of the continuation of dumping. At the landed price there is significant undercutting. Thus, with the revocation of anti dumping duties, the Indian prices would be too attractive to the Foreign Producers and there is strong likelihood that Indian Consumers would import substantially due to increasing demand.

Export orientation of foreign producers

63. From the information available in the website and the correspondences made by the exporter during the original investigation period, it is evident that M/s. Sina Chémical Industrial Company is the sole manufacturer of the subject goods in Iran and their annual production of Hexamine and Formaline is reportedly 66,000 MT . During the original investigation period they had exported mainly to India, South Africa, Pakistan, Spain, Malaysia etc. and they seem to have no domestic sales. Due to non-cooperation of the exporter during the present investigation, the information regarding their production capacity, actual production, exports, domestic consumption etc are not available. However from the data available during the original investigation period, it can be

presumed that the subject exporter is basically an export oriented company. The operative anti-dumping duty has successfully prevented them from dumping their goods into India at dumped prices.

H. FINAL FINDINGS:

64. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margins of the subject goods imported from Iran is substantial and above de-minimis.
- ii) The subject goods are likely to enter the Indian market at dumped prices and the likely dumping margins in respect of imports from Iran is substantial and above de-minimis.
- iii) The subject goods are likely to enter Indian market at dumped prices, should the present measures be withdrawn.
- iv) Even though the domestic industry has improved its performance during the POI, the situation of domestic industry continues to be fragile and dumped imports from subject countries continue to cause a substantial injury to the domestic industry. Further, should the present anti dumping duties be revoked, injury to the domestic industry is likely to continue and intensify..

I. Indian industry's interest and other issues

65. The Authority recognises that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practise, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of the anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any

way, and therefore, would not affect the availability of the products to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

66. The purpose of anti dumping duties , in general ,is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market , which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way ,and ,therefore ,would not affect the availability of the products to the consumers.

J. Recommendations

67. Having concluded that the situation of the domestic industry continues to be fragile and there is likelihood of continuation or resumption of dumping and injury on account of imports from Iran, if the duties are revoked, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended in respect of imports from Iran.

68. Having examined the current dumping and likelihood of dumping to be imminent in case of withdrawal of the current measure in place, the Authority recommends continued imposition of Anti-Dumping Duty in place as recommended by the Authority vide Final Findings Notification No. 14/35/2002-DGAD Dated 11.04.2005 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-I, Section-I, Dated 14.04.2005 and notified by the Central Government vide Notification No. 58/2005-Customs Dated. 30.06.2005.

69. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority